प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

मघवा स्मारक में प्रवचन

अकिंचन होता है त्रिलोकी का नाथ : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 5 जुलाई , 2010

आचार्यश्री महाश्रमण प्रात: सात बजे श्री समवसरण से प्रस्थान कर दुगड़ विद्यालय रोड, घंटाघर, मुख्य बाजार तेरापंथ सभा भवन होते हुए मघवा स्मारक पधारे। आचार्यश्री महाश्रमण ने स्थानीय तेरापंथी सभा के अन्तर्गत निर्मित मघवा स्मारक में उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जो व्यक्ति ज्ञानशील होता है, आचारशील होता है वह इस पृथ्वी को जीतने वाला होता है और वही व्यक्ति यमलोक, देवलोक को जीतने वाला हो सकता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि सरदारशहर को दो-दो आचार्यों की समाधि स्थल प्राप्त है। उन्होंने मघवागणी के संस्मरणों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि आचार्य मघवागणी तेरापंथ धर्मसंघ के पांचवे आचार्य थे, मघवागणी में साधना थी वे वीतराग तुल्य थे मघवागणी की साधना उच्चकोटी की साधना थी। उनका हृदय कोमल था वे अपने गुरु के प्रति विनीत थे। मघवागणी ने अठारह साल युवाचार्य पद पर रहे और ग्यारह साल आचार्य पद पर रहे, उनके जैसा विनम्र, तपस्वी साधु यमलोक और देवलोक को जीतने वाले हो सकते हैं।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि जो व्यक्ति भौतिक वस्तुओं का त्यागी होता है, जिसके पास कुछ नहीं होता वह अकिंचन होता है, जिसके पास कुछ नहीं होता वह तीन लोकों को जीतने वाला हो सकता है। तीन लोक का स्वामी बनने के लिए त्याग संयम की अपेक्षा होती है।

प्रवचन से पूर्व स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया, चातुर्मास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष बिमल कुमार नाहटा, स्थानीय तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक नाहटा ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर स्थानीय जैन श्वेताम्बर तेरापंथी के उपाध्यक्ष पन्नालाल सेठिया, मंत्री पीरदान चिण्डालिया, कोषाध्यक्ष चम्पालाल भंसाली, उपमंत्री चैनरूप दूगड़, तेजकरण भंसाली, जब्बर चिण्डालिया, संजय बरड़िया, संपत सुराणा , बच्छराज बुच्चा, श्रीचंद छाजेड़ आदि सभा के पदाधिकारीगण विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार ने किया।

शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)